एमबीए पास बनी किसान

खीरा उत्पादन से 15 लाख

रीना तंवर

जिला: भीलवाड़ा (राजस्थान)

मोबाइल-7726007779

मौसम में आ रहे बदलाव और अलाभकारी साबित होती परम्परागत कृषि के चलते अक्सर पढऩे-सुनने को मिलता है, अन्नदाता दु:खी है। लेकिन, ऐसे भी लोग है, जो खेती के लिए अपनी नौकरी भी दांव पर लगा रहे है। ऐसी ही महिला किसान है रीना तंवर, जिन्होंने खेती-किसानी के लिए नौकरी छोड़ी। अब संरक्षित खेती कर सालाना 15-20 लाख रूपए की आय खीरा उत्पादन से ले रही है। साथ ही, ग्रामीण युवाओं और कृषक महिलाओं को भी कुछ अलग करने की प्रेरणा दे रही है। गौरतलब है कि एमबीए डिग्रीधारी इस महिला ने सात-आठ साल नौकरी भी की है। यही से किसान बनने के लिए प्रोत्साहित हुई।

खीरा उत्पादन से 15 लाख

कृषि क्षेत्र में भी अब महिला किसान ना केवल आत्मनिर्भर बन रही है। बल्कि, महिला सशक्तिकरण के नये आयाम भी स्थापित कर रही हैं। इसका ताजा उदाहरण देखने को मिला प्रदेश के भीलवाड़ा जिले में। खेती के लिए नौकरी छोडऩे वाली एमबीए डिग्रीधारी यह महिला है रीना तंवर, जो ग्रीन हाउस में खीरा उत्पादन कर सालाना 15-20 लाख रूपए की आमदनी ले रही है। साथ ही, दूसरी महिला किसानों को भी कुछ कर गुजरने की प्रेरणा प्रदान कर रही है। भीलवाड़ा से कोटा स्टेट हाइवे के समीपस्थ खेत पर 4000-4000 स्क्वायर मीटर क्षेत्र में स्थापित दो ग्रीन हाउस इस महिला किसान की मेहनत और नवाचारी सोच को बयां कर रहे है। गौरतलब है कि नौकरी करने के दौरान ही इस महिला का रूझान कृषि के प्रति बढ़ा। एक सफल किसान बनने के लिए प्रदेश के साथ-साथ दूसरे राज्यों में किसानों द्वारा उपयोग ली जा रही कृषि तकनीक का अध्ययन भी इस महिला कृषक ने किया। अपने अनुभव साझा करते हुए इस महिला किसान का कहना है कि संरक्षित कृषि वर्तमान परिवेश में किसान के लिए काफी फायदेमंद है। जरूरत है किसान को जागरूक होकर कृषि करने की। रही बात लाभ कि तो इसके लिए भी किसान को बाजार का जानकार बनना होगा। महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, हरियाणा, गुजरात आदि राज्यों का भ्रमण करने के बाद ही मैने कृषि क्षेत्र में कदम रखा। प्रदेश के साथ-साथ दूसरे राज्यों

के किसानों से मिले संरक्षित खेती के अनुभवों ने मुझे प्रोत्साहित किया। अब वर्ष भर खीरे का उत्पादन कर अच्छा लाभ घर बैठे कमा रही हूँ।

कृषि से नहीं था वास्ता

परिवार के किसी सदस्य का जुड़ाव कृषि से नहीं था। क्योंकि, कृषि भूमि के नाम पर एक इंच जमीन भी परिवार के पास नहीं थी। एमबीए करने के बाद क्षेत्रीय किसानों से काफी कुछ सीखनें का अवसर मिला। बस, यही से मुझे किसान बनने की प्रेरणा मिली। नौकरी के दौरान जमा पूंजी से 6-7 बीघा कृषि भूमि खरीदी। इससे पूर्व परिवारजनों की रजामंदी भी ली। उनकी सहमति के बाद कृषि क्षेत्र में मैने कदम रखा।

एमबीए पास ऐसे बनी किसान

एमबीए करने के बाद कृषि क्षेत्र में कार्य करने वाली उदयपुर की एक गैर सरकारी संस्था में नौकरी करने लगी। 7-8 साल नौकरी की। इस दौरान मुझे किसानों को लेकर राज्य और अंतरराज्यीय भ्रमण पर जाना होता था। प्रगतिशील किसानों द्वारा कृषि क्षेत्र में किये नवाचारों से रू-ब-रू होने का मौका मिलता। साथ ही, कृषि से होने वाली आय के बारे में अलग-अलग विचार सुनने को मिलते। प्रगतिशील किसानों के ऐसे ही विचारों से प्रेरित होकर मैंने नौकरी छोड़ खेती करने का निर्णय लिया।

100 टन खीरा

मेरे पास 4000-4000 स्क्वायर मीटर के दो ग्रीन हाउस है। इनमें खीरे की फसल का उत्पादन ले रही हूॅ। फसल की देखरेख के लिए दो परिवारों को वर्षभर के लिए रोजगार पर रखा हुआ है। शुरूआत में 35 टन खीरे का उत्पादन मिला। लेकिन, अब संरक्षित खेती की बारीकियों को अच्छे से समझ चुकी हूॅ। इस वर्ष 100 टन खीरे का उत्पादन आया है। हालांकि, बाजार भाव पिछले वर्ष की अपेक्षा कम मिल रहे है। फिर भी, 15-20 लाख रूपए की आय होने की उम्मीद है। इसके अलावा गेहूं, मक्का और सब्जियों में ग्वारफली, मिर्च, बैंगन, टमाटर, लौकी, तुरई का उत्पादन लेती हूॅ। सिंचाई के लिए फार्मपौण्ड के अलावा कुआं और ट्यूबवैल मेरे पास है। विद्युत बचत के लिए सोलर सिंचाई पम्प संयंत्र लगवाया हुआ है।

साभार हलधर टाइम्स। वर्ष 12। अंक 31। 05-11 जून 2017